लालची कबूतर

एक बार की बात किसी जंगल में एक बढा सा पेड़ था। उस पेड़ पर प्रतिदिन बहुत से पक्षी आकर विश्राम करते थे । एक दिन एक बहेलिये ने पक्षी पकड़ने की इच्छा से वहाँ चावल के दाने फैला दिये और उसके ऊपर जाल बिछा दिया और स्वयं एक पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गया ।

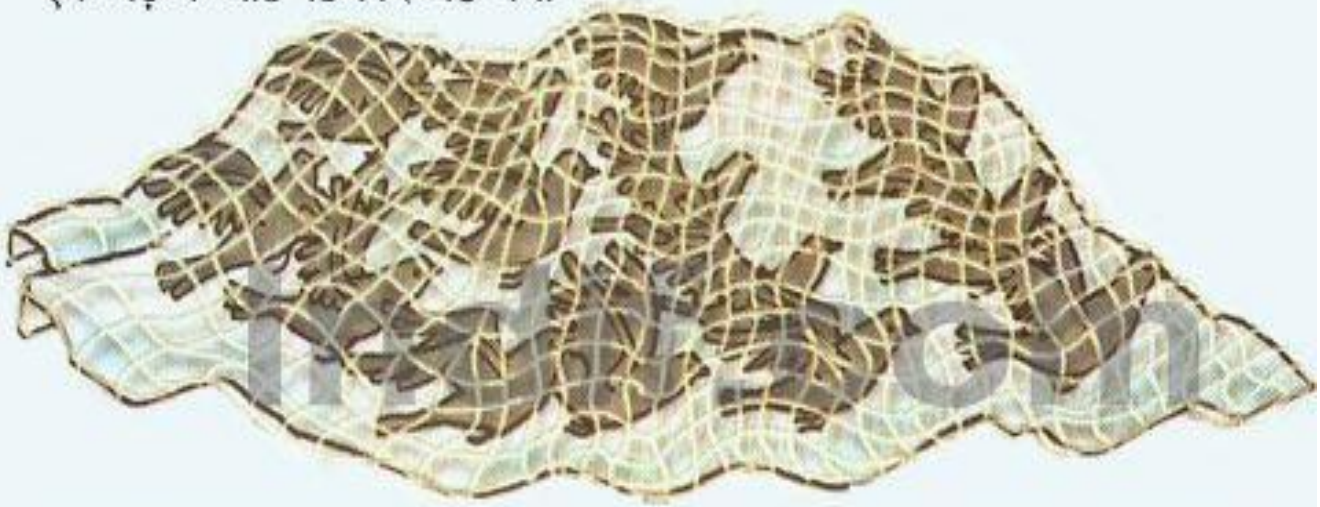

कुछ समय बाद उस पेड़ पर एक कबूतरों का झुण्ड आकर विश्राम करने लगा । तभी उनकी नजर चावलों के दानो पर पड़ी । दाने देखकर उनकी भूख जाग उठी और वह दाने चुगने के लिए जाने लगे । तब उनके मुखिया ने उन्हे समझाया की उसे इन दानों के पीछे कुछ गड़बड़ लग रही है, इसलिए उन्हे यह दानें नहीं चुगने चाहिए । पर कबूतरो ने अपने मुखियाकी बात नहीं सुनी और दाने चुगने के लिए चले गए । सारे कबूतर जाल में फँस गए । उन्हे अपने मुखिया की बात न मानने तथा लालच करने की सजा मिल गई । उनके मुखिया ने उन्हे एक दिशा में उड़ने के लिए कहा । सब कबूतर जाल के साथ एक ही दिशा में उड़े और बेहलिया देखता ही रह गया । सब कबूतर अपने मुखिया के दोस्त चूहे के घर जा पहुँचे । चूहे ने अपने पैने दाँतो से जाल काट कर कबूतरों को मुक्त कर दिया । कबूतरों ने अपने प्राण बचाने वाले नन्हे चूहे को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और सब कबूतर नीले आसमान में फिर उड़ गये । इस तरह हमें पता चलता है कि हमें कभी लालच नहीं करना चाहिए, अन्यथा हम भी कबूतरों की तरह सँकट में फँस सकते है। साथ ही हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि एकता में ही शक्ति है।

अभ्यास कार्य

प्र. (1) नीचे दिये गए रिक्त स्थानों को कहानी की मदद से भरो–

1. पेड़ पर प्रतिदिन बहुत से ..... आकर ..... करते थे।
2. बहेलिये ने पक्षी पकड़ने की इच्छा से वहाँ ..... फैला दिये।
3. दाने देखकर उनकी ..... जाग उठी।
4. कबूतरों ने अपने ..... की बात नहीं सुनी।
5. सब कबूतर अपने मुखिया के दोस्त ..... के घर जा पहुँचे।

प्र.(2) जाल को किसने काटा था ?

.....

प्र.(3) जाल किसने फैलाया था?

.....

प्र.(4) बहेलिये ने जाल क्यों फैलाया था ?

.....

प्र.(5) मुखिया ने उन्हें क्या समझाया?

.....

.....

रवीन्द्र कुमार वर्मा
पी.आर.टी.
के.वि. अनन्तनाग